10

कंपनी चित्रशैली

पिछले अध्याय में हमने दक्षिण भारतीय चित्रकला के बारे में जाना। अब प्रस्तुत पाठ में हम कंपनी चित्रशैली के बारे में जानेंगे। अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में 'ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी' ने दक्षिण एशिया में अपने प्रभाव का विस्तार किया। इस समय कंपनी के अनेक कर्मचारी इंग्लैंड से भारत आए। कलाकार, कवि, लेखक, नर्तक एवं संगीतकारों को अब तक राज दरबारों में संरक्षण प्राप्त था पर अब वे भी अपने जीवन- यापन के नए अवसर तलाशने हेतु दूर चले गए। अंग्रेज़ भारत के जनसामान्य की विविधता से आकर्षित एवं अचंभित थे। वे यहाँ की शानदार ऐतिहासिक इमारतों तथा सुंदर प्राकृतिक दृश्यों से भी प्रभावित हुए। वे इन सुंदर छवियों को पा लेना चाहते थे। वे इन्हें यादगार एवं निशानी के तौर पर इंगलैंड में बसे अपने रिश्तेदारों एवं मित्रों के लिए एकत्रित करना चाहते थे। लेकिन उनमें से अधिक के पास इतने संसाधन नहीं थे कि वे इन विषयों पर ब्रिटिश कलाकारों द्वारा बनाई गई कलाकृतियों को खरीद सकें। अत: उन्होंने भारतीय चित्रकारों को अपने पसंदीदा विषयों पर चित्र बनाने के लिए प्रेरित किया। भारतीय चित्रकारों ने आय के इस नए अवसर का स्वागत किया और वे नए ब्रिटिश संरक्षकों के लिए सराहनीय कार्य करने लगे। ब्रिटिश संरक्षकों ने भी शीघ्र ही यह समझ लिया कि उनके प्रिय विषयों पर भारत के चित्रकार अधिक सटीक और प्रभावशाली ढंग से चित्रकारी कर सकते हैं, क्योंकि वे यहाँ के परिवेश से पूरी तरह परिचित हैं। भारतीय चित्रकारों द्वारा उस दौरान बनाये गए चित्र सामूहिक तौर पर कंपनी चित्र के नाम से जाने जाते हैं। 18वीं एवं 19वीं सदी के दौरान वे चित्र भारतीय कला-जगत पर प्रमुखता से छाए हुए थे। इन चित्रों में राजपूत एवं मुग़ल लघुचित्रों के पारंपारिक कला तत्त्वों के साथ पश्चिमी दृष्टिकोण का सम्मिश्रण हुआ। इस प्रकार पेंटिंग में न तो तस्वीर की सटीकता थी और न ही लघु पेंटिंग की स्वतंत्रता।

कंपनी चित्रों का सृजन सबसे पहले मद्रास प्रेसीडेंसी में हुआ, परंतु शीघ्र ही इसका विस्तार भारत के अन्य नगरों; जैसे- कलकत्ता, मुर्शीदाबाद, पटना, बनारस, लखनऊ, आगरा, दिल्ली, पंजाब, एवं पश्चिमी भारत के अन्य केन्द्रों तक हो गया। भारतीय चित्रकारों ने भारतीय भूदृश्यों, पशु-पक्षी, वनस्पति, स्थानीय शासकों की छवियाँ, दरबारों के दृश्य, ऐतिहासिक इमारतें, त्यौहार एवं उत्सव, व्यापार एव व्यावसायिक पेशे, आदि विषयों पर चित्रों की मांग को पूरा करना शुरू कर दिया। पश्चिमी संरक्षकों के लिए चित्र अक्सर काल्पनिक चित्रण के स्थान पर वास्तविक दस्तावेजीकरण

जैसे थे। इन चित्रों को जलरंगों के माध्यम से बनाया गया है। ये चित्र अधिकांशत: कागजों पर बनाए गए हैं, लेकिन कभी-कभी हाथीदाँत पर भी चित्रांकन किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- कंपनी चित्रों के उद्भव एवं विकास के बारे में लिख सकेंगे;
- कंपनी चित्रों की मुख्य विशेषताएँ बता सकेंगे;
- सूचीबद्ध चित्रों में प्रयुक्त सामग्री, पद्धति, योजना एवं शैली के बारे में उल्लेख कर सकेंगे;
- कंपनी चित्रों की विषयवस्तु के महत्व पर चर्चा कर सकेंगे;
- 'कंपनी चित्र' का अर्थ समझा सकेंगे।

10.1 साधारण भारतीय चकोर चिड़िया

प्रिय शिक्षार्थी! यहाँ हम भारत में पाई जानेवाली चकोर चिड़िया के चित्र के विषय में जानेंगे।

बुनियादी सूचना

मुग़ल सम्राट जहाँगीर के समय से ही पशु-पक्षी एवं पुष्प भारतीय कला का महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। इस लोकप्रिय और स्थापित परंपरा का ब्रिटिश संरक्षकों के समय में विस्तार हुआ। मुग़ल और ब्रिटिश काल में बने चित्रों में शैलीगत रूप से बहुत अंतर था। प्रस्तुत चित्र में एक सामान्य भारतीय

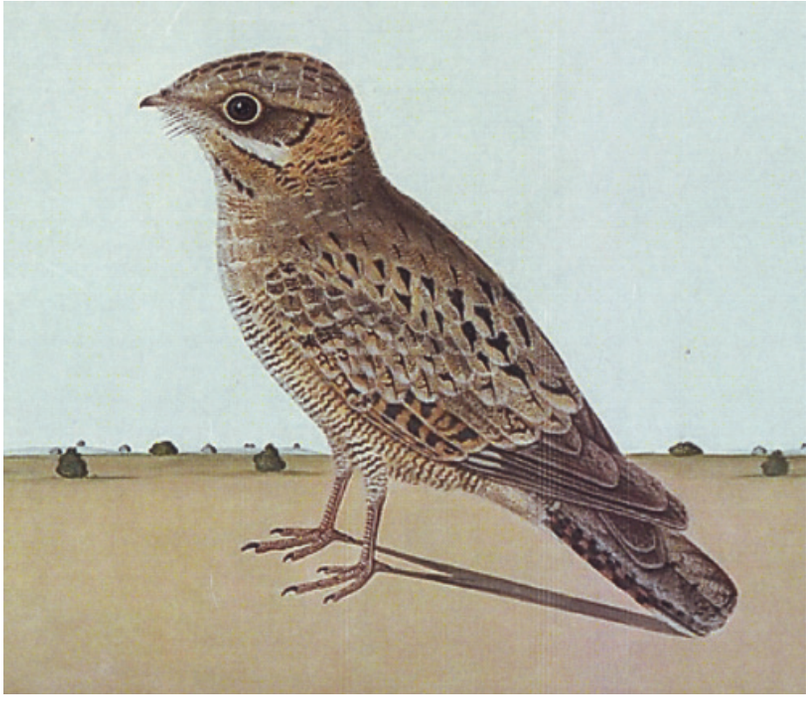

चित्र 8.1: साधारण भारतीय चकोर चिड़िया

चकोर चिड़िया को बहुत ही वास्तविक एवं सटीक विवरणों सहित चित्रित किया गया है। इस चित्र में चकोर पृष्ठभूमि में चित्रित विस्तृत भूदृश्य की तुलना में प्रमुखता से दिख रहा है। यह चित्र फ्रांसीसी योद्धा क्लाउड मार्टिन के संग्रह का एक प्रमुख चित्र है।

शीर्षक : **साधारण भारतीय चकोर चिड़िया**
काल : 18वीं सदी ईसवी
चित्रकार : अज्ञात
माध्यम : कागज पर जलरंग
शैली : कंपनी शैली, लखनऊ
संग्रह : मैट्रोपोलिटन म्युजियम, न्यूयार्क

सामान्य विवरण

कंपनी शैली में बने चित्रों में वनस्पति एवं पशु-पक्षियों पर बनाए गए चित्र उच्च कोटि के हैं। साधारण चकोर चिड़िया का यह चित्र उनमें से एक है। इस चित्रण में चित्रकार ने महीन विवरणों पर विशेष ध्यान दिया गया है। चिड़िया के प्रत्येक पंख में बारीकी से रंग भरकर उसकी बाह्यरेखा अंकित की गई है। शरीर के धब्बों एवं चिह्नों को चित्रित करने हेतु काले एवं भूरे रंग की अनेक छटाओं का सुंदरता से प्रयोग किया गया है।

आँखों को घेरता हुआ चमकदार वृत्त चित्रित है तथा पैरों की सतह का खुरदरापन दर्शाने हेतु समानांतर रेखाओं की पुनरावृत्ति की गई है। भूदृश्य जिसमें चिड़िया खड़ी है, को चिड़िया से छोटे पैमाने पर तथा अल्पविवरण के साथ बनाया गया है। कंपनी शैली में इस प्रकार के चित्रों का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश दर्शकों के लिए नई प्रजाति का पूर्ण विवरण चित्रित करना था। यह चित्र 18वीं सदी ईसवीं में लखनऊ में एक फ्रांसीसी सैनिक एवं कला-संरक्षक क्लाउड मार्टिन के चित्र संग्रह से लिया गया है। यह चित्र कागज पर जलरंग से बनाया गया है। चिड़िया के हु-बहू चित्रण हेतु ठेठ पश्चिमी जलरंग तकनीक का प्रयोग किया गया है, जिसमें ब्रश के बेधड़क संघात एवं कोमल रंग छटाएँ प्रयुक्त की जाती हैं। इन चित्रों का आकार छोटा रखा जाता था, ताकि उन्हें एलबम में रखा जा सके। पृष्ठभूमि में गहराई का आभास लाने हेतु रंग की छटाओं का एक क्रमिक आरोह-अवरोह रखा जाता था।

पाठगत प्रश्न 10.1

सुमेलित कीजिए :

1.	शैली	(i)	भूरा
2.	रंग	(ii)	जलरंग
3.	माध्यम	(iii)	कंपनी
4.	तकनीक	(iv)	मेट्रोपालिटन म्यूज़ियम, न्यूयार्क
5.	संग्रह	(v)	विशिष्ट पश्चिमी जलरंग

10.2 बाज़ार का दृश्य

बुनियादी सूचना

इस चित्र में पटना के पारंपरिक बाज़ार का दृश्य दर्शाया गया है, जिसमें दो औरतें सब्जी, फल एवं अनाज बेच रहीं हैं। चित्रकार शिवदयाल लाल ने बेचे जा रहे फल, सब्जियों एवं अनाज के विवरणों को सटीकता और सुंदरता से चित्रित किया है। वे बाज़ार के सहज माहौल को भी दर्शाने में सफल हुए हैं। कपड़ों की बारीकियों एवं विवरणों को ध्यानपूर्वक चित्रित किया गया है। इस चित्र में पृष्ठभूमि पर उतना बल नहीं दिया गया, जितना कंपनी शैली के अन्य चित्रों पर दिया गया है।

चित्र 10.2: बाज़ार का दृश्य

यह चित्र कागज पर अपारदर्शी जलरंगों से बना है। चित्र की पृष्ठभूमि को चित्र की अग्रभूमि से अलग तरीके से बनाया गया है। पृष्ठभूमि में रंग छटाओं के प्रयोग में एक क्रमिक आरोह-अवरोह दिखाई देता है। जलरंगों में अपारदर्शिता के कारण इस चित्र में बहुरंगी एवं चमकदार रंग छटाएँ सुंदर बन पड़ी हैं। इस चित्र में सपाट रंगों एवं सधी हुई रेखाओं का प्रयोग किया गया है।

शीर्षक	:	**बाज़ार का दृश्य**
काल	:	1850
चित्रकार	:	शिवदयाल लाल
माध्यम	:	कागज पर अपारदर्शी जलरंग
शैली	:	कंपनी शैली, पटना
संग्रह	:	विक्टोरिया एण्ड अल्बर्ट म्यूज़ियम, लंदन

सामान्य विवरण

ब्रिटेन के लोग, भारतीय दैनिक जीवन के प्रत्येक दृश्य का चित्र लेना पसंद करते थे। इनमें सब्जी-भाजी, फल एवं अनाज बेचते दुकानदार भी शामिल थे। चित्र (10.2) से ज्ञात होता है कि 1850 के बाज़ार भी आज के भारतीय बाज़ारों से मिलते-जुलते ही थे। इस चित्र में चार महिलाएँ दिखाई दे रही हैं। इनमें से दो दुकानदार हैं तथा शेष दो ग्राहक हैं। जो ग्राहक हैं, वे फल एवं अनाज खरीद रही हैं। सब्जियों, फलों एवं अनाजों के विवरणों को बड़ी ही सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। प्रत्येक फल, सब्जी एवं अनाज की पहचान दर्शाने हेतु उनमें उनके प्राकृतिक रंग भरे गए हैं। चारो स्त्रियाँ साड़ी और आभूषण पहने हैं। साड़ियों के मोड़ एवं तह सुंदरता से चित्रित किए गए है। चित्र की पृष्ठभूमि को रंगों की क्रमिक छटाओं से बहुत अच्छी तरह बनाया गया है। आकाश में बादल चित्रित किए गए हैं, लेकिन चित्र में तत्कालीन भारतीय जीवन-शैली एवं वातावरण को सुंदरता से दर्शाया गया है।

पाठगत प्रश्न 10.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछें गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'बाजार का दृश्य' चित्र के चित्रकार का नाम है-

   (i) शिवदयाल लाल (ii) मानकु

   (iii) नंदलाल बसु (iv) अमृता शेरगिल

2. 'बाजार का दृश्य' में औरतें बेच रही हैं-

   (i) आलू, टमाटर (ii) कुर्ता घोती और पगड़ी

   (iii) सब्जियाँ और अनाज (iv) दो भिन्न प्रकार की सब्जियाँ

3. 'बाजार का दृश्य' में किस माध्यम का प्रयोग किया गया है-

   (i) कागज पर जलरंग (ii) कागज पर पोस्टर रंग

   (iii) विभिन्न माध्यम (iv) कागज पर अपारदशी जलरंग

क्रियाकलाप

अपने आसपास के किसी पुस्तकालय में जाकर और कंपनी शैली के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए। अब संक्षेप में कंपनी चित्रकारी के रूपरंग और शैली के बारे में अपने विचार लिखिए।

.....

.....

.....

10.3 पालकी

प्रिय शिक्षार्थी! हमारे पास 'पालकी' नाम का एक बहुत ही रोचक चित्रकारी का नमूना है तो आइए, इसके बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

प्रस्तुत चित्र तत्कालीन पेशों को दर्शाने वाले 42 चित्रों के समूह में से लिया गया एक प्रसिद्ध चित्र है। चित्र में 'पालकी' में बैठा हुआ एक भद्र पुरुष एवं उस पालकी को चार कहार उठाए दर्शाए गए हैं। कहार एक समान वेषभूषा में हैं, जो उस समय प्रचलित थी। चित्र में कुल मिलाकर पालकी और कहारों को प्रमुखता दी गई है। इस कारण पृष्ठभूमि यूँ ही छोड़ दी गई है। केवल कहारों एव पालकी की छाया को हल्के से दर्शाया गया है। यह चित्र 1815-1820 के मध्य वाराणसी में चित्रित किया गया है।

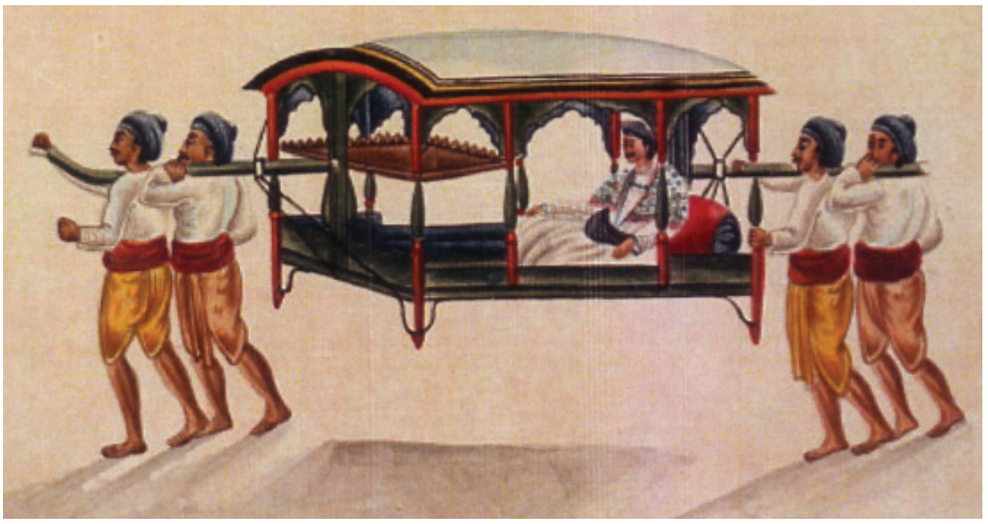

चित्र 10.3: पालकी

शीर्षक	:	**पालकी**
काल	:	1815 - 1820
चित्रकार	:	अज्ञात
माध्यम	:	कागज पर जलरंग
शैली	:	वाराणसी, कंपनी शैली
संग्रह	:	विक्टोरिया एवं अल्बर्ट म्यूज़ियम, लंदन

सामान्य विवरण

यह चित्र भारतीय यातायात एवं व्यवसाय दर्शाने वाले बयालिस चित्रों के एक समूह से लिया गया है, जिसमें एक मियाना अर्थात एक संदूक जैसे आकार की पालकी चित्रित है। चित्र में पालकी

उठाए चार कहार चित्रित हैं; जो सफेद कुर्ता, पीली एवं भूरी धोती तथा सिर पर नीली पगड़ी पहने हैं। वे कमर में एक लाल कपड़ा लपेटे हैं। चित्र में उनकी वेशभूषा के संपूर्ण विवरण अंकित किए गए हैं। कि वे पालकी का भार उठाए तालबद्ध गति से चल रहे हैं। पालकी को सौंदर्यपूर्ण ढंग से बनाया गया है, पालकी में तकिए का सहारा लेकर बैठे भद्र पुरुष के कपड़ों एवं उनके डिज़ाइनों पर प्रमुख रूप से ध्यान दिया गया है। चित्र की पृष्ठभूमि पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। पालकी और उसे उठाए कहारों की परछाइयों से भूमि का आभास होता है। चित्र इन्डो-यूरोपीयन जलरंग तकनीक से कागज पर चित्रित किया गया है। चित्रित मानव-आकृतियाँ को अति वास्तविक रूप में तथा वस्त्रों को शैलीगत ढंग से दर्शाया गया है। कपड़ों की सिलवटों तथा पैरों की लपेटनों में रंगों की छटाओं की विविधता है। पालकी के ज्यामितीय आकार का रेखांकन महीन रेखाओं की सहायता से अत्यंत सटीकता से किया गया है। महीन-से-महीन विवरण पर ध्यान दिया गया है।

पाठगत प्रश्न 10.3

1. 'पालकी' से आप क्या समझते हैं?
2. 'पालकी' चित्र-शैली का नाम लिखिए।
3. 'पालकी' चित्र में पालकी कहारों ने किस तरह के वस्त्र पहने हैं?
4. 'पालकी' चित्र किस काल में बना है?

आपने क्या सीखा

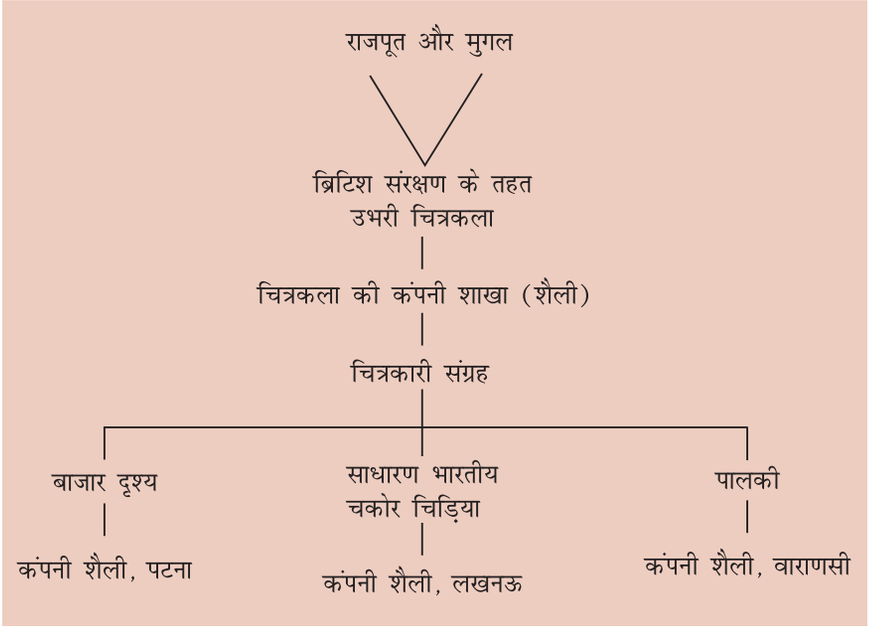

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी :

- अपनी स्वयं की कलाकृति में स्पष्ट उभारों के साथ पारंपरिक पश्चिमी रंग तकनीक का उपयोग करते हैं।
- कागज पर अपारदर्शी जलरंग में चित्रण करता है।

पाठांत प्रश्न

1. यूरोपीय लोगों ने भारतीय चित्रकारों को चित्र बनाने के लिए क्यों प्रेरित किया?
2. कंपनी चित्रों की विषयवस्तु क्या है?
3. कंपनी चित्रों की विशेषताएँ लिखिए।
4. उन शहरों के नाम लिखिए जिनमें 18वीं एवं 19वीं सदी के मध्य कंपनी चित्र बनाए गए।
5. कंपनी चित्रों के उद्भव पर विस्तार से लिखिए।
6. पटना में बने प्रसिद्ध कंपनी चित्र 'बाज़ार का दृश्य' का संक्षिप्त विवरण लिखिए।
7. अपने पाठ्यक्रम से उस चित्र के बारे में विस्तार से लिखिए जिसमें विभिन्न प्रजाति के पक्षियों और जानवरों को चित्रित किया गया है और जो अंग्रेज़ों के लिए नए थे।
8. वाराणसी में बने कंपनी चित्र 'पालकी' की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
9. कंपनी शैली के चित्रकार शिवदयाल लाल की रेखांकन पद्धति का संक्षिप्त विवरण लिखिए।
10. 'बाजार का दृश्य' चित्रकला शैली का नाम लिखिए।
11. 'बाजार का दृश्य' चित्रकला की किस शाखा से संबद्ध है?
12. इस चित्रकला को बनाने के लिए किस माध्यम का प्रयोग किया जाता है?
13. 'पक्षी के विवरण' में प्रयुक्त रंगों के नाम लिखिए।
14. उस व्यकित का नाम लिखिए जिसके अलबम से पक्षी संबंधी चित्र लिया गया है।
15. किस मुगल बादशाह ने वनस्पतियों और जीवों की अलबम बनाने को बहुत महत्व दिया है।
16. इस चित्रकला के काल का उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

1. शैली (i) कंपनी
2. रंग (ii) भूरा

3. माध्यम (iii) जलरंग
4. तकनीक (iv) विशिष्ट पश्चिमी जलरंग
5. संग्रह (v) मेट्रोपॉलिटन म्यूज़ियम, न्यूयार्क

10.2

1. (i) शिवदयाल लाल
2. (iii) दो औरतें सब्जी, फल एवं अनाज बेच रही हैं।
3. (iv) कागज पर अपारदर्शी जलरंग

10.3

1. 'मियाना' का अर्थ है- पालकी
2. वाराणसी, कंपनी शैली
3. कुर्ता, धोती एवं पगड़ी
4. ये चित्र भारतीय यातायात एवं व्यवसाय दर्शाने वाले बयालिस चित्रों के समूह से लिया गया है।

शब्दकोश

उत्तरार्द्ध	बाद का आधा भाग
भूदृश्य	प्राकृतिक वातावरण
चित्र की पृष्ठभूमि	चित्र में बनाए गए प्रमुख चरित्रों के पीछे का शेष स्थान
चित्र का अग्रभाग	चित्र में बनाए गए प्रमुख चरित्रों के पीछे का शेष स्थान
पारदर्शी रंग	रंग के आर पार दिखना
अपारदर्शी रंग	रंग के आर पार न दिखना
कहार	पालकी उठाने वाले मजदूर।